षट्खंडागम परिशीलन (फोल्डर नं. ००१०१७)

पं. बालचन्द्र शास्त्री

मुख्य टाइटल

समर्पण

प्रधान सम्पादकीय

General Editorial

प्रस्तावना

विषयानुक्रमणिका

षटखण्डागम-पीठीका ---------- १

ग्रन्थनाम और खण्डव्यवस्था ---------- १

ग्रन्थकार ----------३

श्रुतपंचमी की प्रसिद्धि ---------- ६

अर्थकर्ता ---------- ७

ग्रन्थकर्ता ----------८

उत्तरोत्तर- तन्त्रकर्ता ---------- ९

सिद्धान्त का अध्ययन ---------- १०

ईन्द्रनन्दि-श्रुतावतार की विशषता ----------१२

अन्यत्र माधनन्दी का उल्लेख ---------- १४

प्राकृत पट्टावली ---------- १५

प्राकृत पट्टावली की विशेषाएँ ---------- १७

अर्हदवली का शिष्यत्व ----------१८

धरसेनाचार्य व योनिप्राभुत ---------- १९

ग्रन्थ की भाषा ----------२१

विवेचन- पद्धति ---------- ३४

प्रश्नोत्तर शैली ---------- ३४

अनुयोगद्वारों का विभाग ---------- ३५

आघ- आदेश ---------- ३५

चूलिका ---------- ३५

निक्षेप व नय ---------- ३६

सूत्ररचना ---------- ३७

चूर्णिसूत्र ---------- ३८

विभाषा ---------- ३९

कुछ निश्चत शब्दों का प्रयोग ---------- ४०

अनेक शब्दों का उपयोग ---------- ४२

शब्दों की पुनरावृति ---------- ४२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मूलग्रन्थगत विषय का परिचय

प्रथम खण्ड जीवस्थान -- ४४
सत्प्ररुपणा -- ४४
द्रव्यप्रमाणानुगम -- ४८
क्षेत्रानुगम -- ५०
स्पर्शनानुगम -- ५१
कालानुगम -- ५२
अन्तरानुगम -- ५३
भावानुगम -- ५४
अल्पबहुत्वानुगम -- ५५
जीवस्थान- चूलिका -- ५५
प्रकृतिसमुत्कीर्तन -- ५६
स्थानसमुत्कीर्तन -- ५६
प्रथम दण्डक -- ५७
द्वितीय दण्डक -- ५७
तृतीय दण्डक -- ५७
उत्कृष्ट स्थिति -- ५७
जधन्य स्थिति -- ५८
सम्यकत्वोत्पत्ति -- ५८
गति- आगति -- ६०
द्वितीय खण्ड क्षुद्रकबन्ध -- ६३
बन्धकसत्व -- ६३
एक जीव की अपेक्षा स्वामित्व -- ६४
एक जीव की अपेक्षा कालानुगम-- ६४
एक जीव की अपेक्षा अन्तरानुगम -- ६५
नाना जीवों की अपेक्षा भंगविचय -- ६५
द्रव्यप्रमाणानुम -- ६६
क्षेत्रानुगम -- ६६
स्पर्शानानुगम -- ६७
नाना जीवों की अपेक्षा कालानुगम -- ६८
नाना जीवों की अपेक्षा भंगविचय -- ६८
भागाभागानुगम-- ६९
अल्पबहुत्वानुगम -- ७०
महादण्डक (चूलिका) -- ७१
तृतीय खण्ड बन्धस्वामित्वविचय -- ७१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओघ प्ररुपणा -- ७१
आदेशप्ररुपणा -- ७२
चतुर्थ खण्ड वेदना -- ७२-१०३
कृति अनुयोगद्वार -- ७३
वेदना अनुयोगद्वार --- ७८
वेदना- निक्षेप --- ७९
वेदना नयविभाषणता -- ७९
वेदनानामविधान --- ७९
वेदनाद्रव्यविधान --- ८०
चूलिका -- ८४
वेदनाक्षेत्रविधान --- ८५
वेदनाकालविधान -- ८७
चूलिका १ -- ८९
चूलिका २ -- ९०
वेदनाभावविधान -- ९२
चूलिका १ -- ९४
चूलिका २ -- ९४
चूलिका ३ -- ९५
वेदनाप्रत्ययविधान -- ९५
वेदनास्वामित्वविधान -- ९६
वेदनावेदनाविधान --- ९७
वेदनागतिविधान -- ९९
वेदना-अनन्तरविधान -- ९९
वेदनासंनिकर्षविधान -- ९९
वेदनापरिमाणविधान -- १०१
वेदनाभागविधान -- १०२
वेदनाअल्पबहुत्व --- १०२
पंचम खण्ड वर्गणा --- १०३-३५
स्पर्श (३) -- १०३
कर्म (४० -- १०७
प्रकृति (५) -- १०९
बन्धन (६) -- ११६
बन्ध --- ११७
बन्धक --- १२१
बन्धनीय (वर्गणा आदि १-८ अनुयोगद्वार)--१२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्गणा अनुयोगद्वार में वर्गणानिक्षेप आदि १६ अनु. -------------------------------१२१
वर्गणा के भेद प्रभेद ---१२१
वर्गणानिक्षेप --- १२२
वर्गणानयविभाषणता --- १२२
वर्गणादि ८ अनुयोगद्वारगत दूसरे वर्गणाद्रव्यसमुदाहार में.. ----------------------- १२२
वर्गणाप्ररुपणा में एकप्रदेशिक परमाणुपुदगल वर्गणादि.. -------------------------- १२२
दूसरे वर्गणानिरुपणा में भेद व भेदसंघात आदि से उत्पन्न होने का विचार ------- १२३
वर्गणाध्रु वाध्रु वानुगम आदि शेष १२ अनुयोगद्वारों की प्ररुपणा.. ------------------ १२३
बाह्य वर्गणा में शरीरिशरीरप्ररुपणा आदि ४ अनुयोगद्वार ------------------------- १२४
शरीरिशरीरीप्ररुपणा--- १२४
शरीरप्ररुपणा --- १२८
शरीरविस्त्रसोपचयप्ररुपणा ---१३१
विस्त्रसोपचयप्ररुपणा -- १३२
चूलिका में निगोद जीवों की उत्पत्ति व मरण आदि का विचार ------------------ १३३
षष्ठ खण्ड महाबन्ध --- १३५-४२
प्रकृत्तिबन्ध -- १३६
स्थितिबन्ध -- १३८
अनुभागबन्ध -- १३९
प्रदेशबन्ध -- १४०
षटखण्डागम की अन्य ग्रन्थों से तुलना
षटखण्डागम व कषायप्राभुत--- १४३
दोनों ग्रन्थों में समानता --- १४४
दोनों ग्रन्थ में विशेषता --- १४८
षटखण्डागम व मूलाचार -- १५०
दोनों ग्रन्थगत समानता --- १५१
उपसंहार --- १५९
मूलाचार का कर्तुत्व --- १६०
षटखण्डागम और तत्वार्थसूत्र --- १६१
दोनों में विषयविवेचन की समानता -- १६२
उपसंहार ---१८१
षटखण्डागम और कर्मप्रकृति --- १८३
विषयप्ररुपणा में शब्दार्थगत समानता -- १८३
दोनों ग्रन्थगत विशेषता --- १९४
षटखण्डागम और सर्वार्थसिद्धी --- १९७
स० सि० में की गयी सत्शंख्या आदि सूत्र (१-८) की... -------------------------------- १९८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्य कुछ उदाहरण -- २०४
उपसंहार -- २०७
षटखण्डागम और तत्वार्थवार्तिक --- २०८
धवलाकार द्वारा त० व ० का तत्वार्थभाष्य के नाम से उल्लेख ---------------------------- २०९
त ० व० के कर्ता द्वारा ष० ख के अन्तर्गत खण्ड व अनुयोगद्वार ... --------------------- २०९
दोनों ग्रन्थगत समानता के कुछ उदाहरण --- २०९
षटखण्डागम और आचारांग --- २२०
प्रास्ताविक -- २२०
दोनों ग्रन्थगत मन पर्यय और केवलज्ञान विषयक सन्दर्भों की समानता ----------------- २२१
षटखण्डागम और जीवसमास -- २२२
प्रास्ताविक -- २२२
दोनों ग्रन्थगत समानता व विशेषता -- २२३
उपसंहार -- २२७
षटखण्डागम और पण्णवणा (प्रज्ञापना) -- २२८
पण्णवणा का संक्षिप्त परिचय-- २२८
दोनों ग्रन्थगत समानता -- २३०
दोनों ग्रन्थगत महादण्डक विषयक समानत और विशेषता ------------------------------ २३७
दोनों ग्रन्थगत विशेषता -- २४१
दोनों ग्रन्थगत प्रश्नोंत्तरशैली में विशेषता --- २४६
षटखण्डागम और प्रज्ञापना में प्राचीन कौन --- २४८
उपसंहार -- २५७
षटखण्डागम और अनुयोगद्वारसूत्र -- २६२
अनुयोगद्वार के रचियता व रचनाकाल -- २६२
अनुयोगद्वार में चर्चित विषय का दिग्दर्शन और उसकी.. ------------------------------- २६२
दोनों ग्रन्थों की विशेषता -- २६६
ष० ख० मूल में जिसका स्पष्टीकरण नहीं हैं अनुयोगद्वार में.. --------------------------- २६९
ष० ख० की टीका धवला व अनुयोगद्वार --- २७०
धवला में प्ररुपित विषयों की अनुयोगद्वार के साथ समानता ---------------------------- २७०
उपसंहार -- २७५
षटखण्डागम और नन्दिसूत्र -- २७७
नन्दिसूत्र में मंगलपूर्वक स्यविरावली का क्रमनिर्देश ----------------------------------- २७७
दोनों ग्रन्थों में प्ररुपित ज्ञानावरणीय और ज्ञानाविषयक समानता ---------------------- २७७
अन्य ज्ञातव्य --- २८३
षटखण्डागम (धवला) और दि. पंचसंग्रह --- २८४
पं० सं० का प्रथम प्रकरण जीवमास व ष० ख० का जीवस्थान खड -------------------- २८५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धवला में उदधुत गाथाएँ प्रचुर संख्या में पंचसंग्रह में उपलब्ध -------------------------- २८५
क्या प्रस्तुत पंचसंग्रह धवलाकार के समक्ष रहा हैं -------------------------------------- २९०
पंचसंग्रह के अन्य प्रकरणों में भी धवला की समानता --------------------------------- २९४
विशेषता -- २९५
विशेष प्ररुपणा -- २९९
षटखण्डागम और गोम्मटसार -- ३००
जीवकाण्ड -- ३०१
मूलाचार -- ३१२
तत्वार्थवार्तिक -- ३१३
ग्रन्थान्तर --- ३१८
बीस प्ररुपणाओं का अन्तर्भाव --- ३१९
अन्यत्र से ग्रन्थ में आत्मसात की गयी गाथाओं की अनुक्रमणिका ------------------- ३२०
कर्मकाण्ड --- ३२४
उपसंहार -- ३३६
षटखण्डागम एर टीकाएँ
पद्मनन्दि विरचित परिकर्म -- ३३७
शामकुण्डकृत पद्धति -- ३४०
तुम्बुलूराचार्य कृत चूडामणि -- ३४०
समन्तभद्र विरचित टीका -- ३४१
वप्पदेव विरचित व्याख्या -- ३४२
आ० वीरसेन विरचित धवला टीका --- ३४४
विचारणीय समस्या -- ३४५
आचार्य वीरसेन और उनकी धवला टीका--- ३४८-६३
गुरु आदि का उल्लेख तथा रचनाकाल -- ३४८
विरसेन का व्यक्तित्व -- ३५०
सिद्धान्तपारिगामिता -- ३५०
ज्योतिर्वित्व -- ३५१
गणिज्ञता -- ३५२
व्याकरणपटुता --- ३५४
न्यायनिपुणता -- ३५८
काव्यप्रतिभा --- ३६३
धवलागत विषय का परिचय
प्रथम खण्ड जीवस्थान सत्प्ररुपणा -- ३६४
मंगल आदि छह अधिकार --- ३६५
मंगल, मंगलकर्ता आदि अन्य छह अधिकार -- ३६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निमित्त का प्रकारान्तर से भी निर्देश -- ३६७
कर्ता अर्थकर्ता व ग्रन्थकर्ता -- ३६७
षटखण्डागम की रचना कैसे हुई -- ३६८
जीवस्थान का अवतार (आनुपूर्वी नाम प्रमाण वक्तव्यता व अर्थाधिकार) ------------------ ३६९
निक्षेप नय व अनुगम -- ३७०
भावप्रमाण के ५ भेदों में श्रुतभेद -- ३७२
जीवस्थानगत चूलिकाओं का उदगम -- ३७४
दर्शनविषयक विचार -- ३७६
उपशामन क्षपणविधि -- ३८१
आलाप (बीस प्ररुपणाएँ) -- ३८५
द्रव्यप्रमाणानगम (द्रव्यप्रमाण के साथ लोक आदि की प्रासंगिक चर्चा) ------------------- ३८८
क्षेत्रानुगम में लोकस्थिति का विचार -- ४०१
स्पर्शनानुगम (आ० वीरसेन द्वारा स्वयम्भूरमण समुद्र के आगे भी.. ---------------------- ४०८
कालानुगम (दिन व रात्रि के १५-१५ मुहूर्तो का उल्लेख) -------------------------------- ४१२
अन्तरानुगम -- ४१९
भावानुगम --- ४२१
अल्पबहुत्वानुगम --- ४२७
जीवस्थान- चूलिका (प्रकृतिसमुत्कीर्तन आदि नौ चूलिकाएँ)------------------------------ ४२८
प्रकृतिसमुत्कीर्तन -- ४२९
स्थानसमुत्कीर्तन --- ४३०
(३-५) तीन दण्डक --- ४३०
उत्कृष्ट स्थिति --- ४३१
जधन्य स्थिति --- ४३२
सम्यकत्वोत्पत्ति --- ४३३
गति- आगति --- ४४७
द्वितीयखण्ड क्षुद्रकबन्ध-- ४४७
बन्धकसत्व व अन्तिम महादण्डक के साथ एक जीव की अपेक्षा... --------------------- ४४७
चूलिका महादण्डक -- ४५२
तृतीय खण्ड बन्धस्वामित्वविचय -- ४५२
बन्धस्वामित्व का उदगम व उसका स्पष्टीकरण --------------------------------------- ४५२
स्वोदय- परोदयबन्ध आदि विषयक २३ प्रश्न -- ४५३
तीर्थंकर प्रकृति के बन्धक- अबन्धक --- ४५५
तीर्थंकर प्रकृति के बन्धक कारण --- ४५६
चतुर्थ खण्ड वेदना
कृति अनुयोगद्वार -- ४५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विस्तुत मंगल के प्रसंग में जिन आदि का विचार ---------------------------------- ४५९
अर्थकर्ता महावीर के प्रसंग में उनकी द्रव्य- क्षेत्र आदि से प्ररुपणा -------------------- ४६१
आयुविषयक मतभेद -- ४६३
ग्रन्थकर्ता गणधर --- ४६४
दिव्यध्वनि विषयक विचार -- ४६५
गौतम गणधर
उत्तरोत्तर तन्त्रकर्ता व पूर्वश्रुत से सम्बन्ध -- ४६७
कृतिविषयक प्ररुपणा के प्रसंग में स्वाध्यायविधि का विशेष विचार ------------------- ४७१
गणनाकृति के प्रसंग में गणितभेद आदि--- ४७२
करणकृति का विचार --- ४७५
वेदना अनुयोगद्वार --- ४७७
वेदना- निक्षेप -- ४७७
वेदनानयविभाषणता -- ४७८
वेदनानामविधान -- ४७८
वेदनाद्रव्यविधान -- ४७८
पदमीमांसा आदि तीन अनुयोगद्वार --- ४७८
उत्कृष्ट- अनुत्कृष्ट ज्ञानावरण द्रव्यवेदना का स्वामी ------------------------------- ४८०
आयु के बिना अन्य छह कर्मों की द्रव्यवेदना ----------------------------------- ४८१
आयु की उत्कृष्ट द्रव्यवेदना -- ४८३
ज्ञानावरण आदि की जधन्य- अजन्य द्रव्यवेदना ------------------------------- ४८४
वेदनाद्रव्यविधान से सम्बन्ध चूलिका -- ४८४
योगप्ररुपणा -- ४८५
वेदनाक्षेत्रविधान
पदमीमांसादि तीन अनुयोगद्वार --- ४८६
क्षेत्र की अपेक्षा ज्ञानावरण की उत्कृष्ट अनुकृष्ट वेदना ---------------------------- ४८६
वेदनीय की अनुत्कृष्ट एवं ज्ञानावरणीय की जधन्य क्षेत्रवेदना -------------------- ४८८
वेदनाकालविधान
ज्ञानावरण की उत्कृष्ट अनुत्कृष्ट कालवेदना -- ४९०
वेदनाकालविधान से सम्बद्ध चूलिका- १ -- ४९०
स्थितिबन्धस्थान प्ररुपणादि ४ अनुयोगद्वार ------------------------------------- ४९०
वेदनाकालविधान से सम्बद्ध चूलिका २ --- ४९०
वेदनाभावविधान -- ४९२
वेदनाभावविधान चूलिका १ --- ४९३
वेदनाभावविधान चूलिका २ --- ४९५
वेदनाप्रत्ययविधान -- ४९५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेदनास्वामित्वविधान -- ४९५
वेदनावेदनाविधान -- ४९६
वेदनागतिविधान -- ४९७
वेदनाअन्तरविधान --- ४९९
वेदनासंनिकर्षविधान -- ५००
वेदनापरिमाणविधान -- ५०१
वेदनाभागाभागविधान -- ५०४
वेदनाअल्पबहुत्वविधान -- ५०५
पंचम खण्ड वर्गणा
स्पर्शअनुयोगद्वार (१३ प्रकार के स्पर्श का विवेचन) ------------------------------------ ५०५
कर्मअनुयोगद्वार (१० प्रकार के कर्म का विचार) -- ५०८
तप कर्म के प्रसंग में दस प्रकार का प्रायश्चित -------------------------------------- ५०९
तप कर्म के प्रसंग में चार अधिकारों में ध्यानविषयक विचार ------------------------ ५११
क्रियाकर्म (कृतिकर्म या वन्दना) -- ५१९
कर्मअनुयोगद्वार में प्रसंगप्राप्त एक शंका का समाधान ------------------------------- ५२१
प्रकृतिअनुयोगद्वार
मूल उत्तर प्रकृतियों के प्रसंग में पाँच ज्ञान आदि का विवेचन ---------------------- ५२२
बन्धन अनुयोगद्वार
तेईस वर्णणाओं में प्रत्येकशरीर-द्रव्यवर्गणा पर विशेष प्रकाश------------------------ ५२४
बादरनिगोदवर्गणा --- ५२६
सूक्ष्मनिगोदवर्गणा -- ५२७
बाह्यवर्गणा के प्रसंग में चार अनुयोगद्वार (१) शरीरिशरीर प्ररुपणा (२) शरीरप्ररुपणा (३) शरीरविस्त्रसोपचय प्ररुपणा और विस्त्रसोपचयप्ररुपणा ------------ ५२९
आहारक व तैजस शरीर--- ५३०
मूल ग्रन्थकार द्वारा अप्ररुपित शेष १८ अनुयोगद्वार ------------------------------------- ५३२
निबन्धन अनुयोगद्वार -- ५३३
प्रत्रम अनुयोगद्वार (प्रसंगप्राप्त चर्चा के साथ पत्रमभेद) ------------------------------ ५३५
उपक्रम अनुयोगद्वार --- ५३८
उपशामनोपक्रम के प्रसंग में उपासना के भेद प्रभेद ------------------------------ ५४१
उदयअनुयोगद्वार -- ५४४
मोक्ष अनुयोगद्वार -- ५४६
संक्रम अनुयोगद्वार -- ५४६
लेश्याअनुयोगद्वार -- ५४९
लेश्याकर्म अनुयोगद्वार -- ५५१
लेश्यापरिणाम अनुयोगद्वार -- ५५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सात- सात अनुयोगद्वार -- ५५२
दीर्घ- ह्रस्व अनुयोगद्वार -- ५५३
भवधारणीय अनुयोगद्वार -- ५५३
निधत- अनिधत अनुयोगद्वार -- ५५४
निकाचित अनिकाचित अनुयोगद्वार -- ५५४
कर्मस्थिति अनुयोगद्वार -- ५५५
पश्चिमस्कन्ध अनुयोगद्वार -- ५५५
अल्पबहुत्व अनुयोगद्वार -- ५५७
संतकम्मपंजिया (सत्कर्मपंजिका)
परिचय -- ५६१
उत्थानिका -- ५६२
अर्थविवरण पद्धति -- ५६२
संतकम्मपाहुड -- ५६३
सैद्धान्तिक ज्ञान -- ५६५
ग्रन्थोल्लेख
आचारांग -- ५७२
उच्चारणा -- ५७२
कर्मप्रवाद -- ५७३
करणाणिओगसुत -- ५७४
कसायपाहुड -- ५७४
उपसंहार -- ५८२
मूलकषायप्राभूत -- ५८३
छेदसुत्त -- ५८५
जीवसमास -- ५८५
जोणिपाहुड -- ५८५
णिरयाउबन्धसुत्त -- ५८५
तत्त्वार्थसूत्र -- ५८६
तत्त्वार्थभाष्य -- ५८७
तिलोयपण्णत्तिसुत्त -- ५८७
परियम्म -- ५८९
पंचत्थिपाहुड -- ५९५
पिंडिया -- ५९६
पेज्जदोसपाहुड -- ५९६
महाकम्मपयडिपाहुड -- ५९६
मूलतन्त्र -- ५९८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वियाहपण्णत्तिसुत्त ---------- ५९९
सम्मइसुत्त ---------- ६००
संतकम्मपयडिपाहुड ---------- ६०३
संतकम्मपाहुड ---------- ६०५
सारसंग्रह ---------- ६०५
सिद्धिविनिश्चय ---------- ६०६
सुत्तपोत्थय ---------- ६०६
षट्खण्डागम के अन्तर्गत खण्ड व अनुयोगद्वार आदि अनिर्दिष्टनामग्रन्थ
अनुयोगद्वार ---------- ६०९
आचारांगनिर्युक्ति ---------- ६१०
आप्तमीमांसा ---------- ६१२
आवश्यकनिर्युक्ति ---------- ६१३
उत्तराध्ययन ---------- ६१४
कसायपाहुड ---------- ६१४
गोम्मटसार ---------- ६१४
टाकिच्ककर्कोडॉच ---------- ६१४
जंबूदीवपण्णत्तिसंगहो ---------- ६१४
जीवसमास ---------- ६१५
तत्त्वार्थवार्तिक ---------- ६१५
तत्त्वार्थसूत्र ---------- ६१६
तिलोयपण्णत्त ---------- ६१६
दशवैकालिकी ---------- ६२६
धनंजयनाममाला ---------- ६२९
ध्यानशतक ---------- ६२९
नन्दिसूत्र ---------- ६३४
पंचास्तिकाय ---------- ६३४
प्रज्ञापना ---------- ६३४
प्रमाणवार्तिक ---------- ६३४
प्रवचनसार ---------- ६३४
भगवतीआराधना ---------- ६३५
भावप्राभृत ---------- ६३७
मूलाचार ---------- ६३७
युक्त्यनुशासन ---------- ६३९
लघीयस्त्रय ---------- ६३९
लोकविभाग ---------- ६३९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशेषावश्यकभाष्य -- ६४१
सन्मतिसूत्र -- ६४२
सर्वार्थसिद्धि -- ६४२
सौन्दरानन्दमहाकाव्य -- ६४३
स्थानांग -- ६४३
स्वयम्भूस्तोत्र -- ६४३
हरिवंशपुराण -- ६४४
ग्रन्थकारोल्लेख
आर्यनन्दी -- ६४६
आर्यमंक्षु और नागहस्ती -- ६४७
उच्चारणाचार्य -- ६५५
एलाचार्य -- ६५६
गिद्धपिच्छाइरिय -- ६५६
गुणधरभट्टारक -- ६६८
गौतमस्वामी -- ६७४
धरसेनाचार्य -- ६७६
नागहस्ती क्षमाश्रमण -- ६७६
निक्षेपाचार्य -- ६७६
पुष्पदन्त -- ६७६
पूज्यपाद -- ६८१
प्रभाचन्द्र -- ६८५
भूतबलि -- ६८५
महावचक क्षमाश्रमण -- ६८५
यतिवृषभ -- ६८६
व्याख्यानाचार्य -- ६८७
आचार्य समन्तभद्र -- ६८८
सूत्राचार्य -- ६९६
सेचीय व्याख्यानाचार्य-- ६९७
वीरसेनाचार्य की व्याख्यान-पद्धति
वीरसेनाचार्य की प्रामाणिकता-- ६९८
सूत्र-प्रतिष्ठा (पुनरुक्ति दोष का निराकरण) -- ७००
सूत्र-सूचित विषय की अप्ररूपणा -- ७०३
सूत्र-विरुद्ध व्याख्यान का निषेध -- ७०७
परस्पर-विरुद्ध सूत्रों के सद्भाव में धवलाकार का दृष्टिकोण -------------------------------------- ७०९
सूत्र के अभाव में आचार्य-परम्परागत उपदेश व गुरु के उपदेश को महत्त्व -------------------- ७१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य-परम्परागत उपदेश और गुरूपदेश (तालिका) -------------------------------------- ७२२
सूत्राभाव --- ७२३
दक्षिण-उत्तर प्रतिपत्ति व पवाइज्जंत-अपवाइज्जंत उपदेश ----------------------------------- ७२४
स्वतन्त्र अभिप्राय-- ७२७
देशामर्शक सूत्र आदि --- ७३४
सूत्र-असूत्र विचार -- ७३७
उपदेश के अभाव में प्रसंगप्राप्त विषय की अप्ररूपणा -------------------------------------- ७४०
उपदेश प्राप्त कर जान लेने की प्रेरणा --- ७४१
अवतरण वाक्य
अनुक्रमणिका-- ७४३-७७०
परिशिष्ट
परिशिष्ट-१ –विषयपरिचयाक तालिका
कर्मप्रकृतियाँ और उनकी उत्कृष्ट जघन्य स्थिति आदि ----------------------------------- ७७
नरकादि गतियों में सम्यक्त्वोत्पत्ति के बाह्य कारण ----------------------------------- ७७६
चारों गतियों में गुणस्थान विशेष से सम्बन्धित प्रवेश और निर्गमन -------------------- ७७७
कौन जीव किस गति से किस गति में जाता-आता है --------------------------------- ७७८
ज्ञानादिगुणोत्पादन तालिका -- ७८०
बन्धोदय तालिका -- ७८१
कर्मबन्धप्रत्यय तालिका -- ७८४
परिशिष्ट-२ – मूल षट्खण्डागम के अन्तर्गत गाथासूत्र ------------------------------------ ७८५
परिशिष्ट-३ – षट्खण्डागम मूलगत पारिभाषिक शब्दानुक्रमणिका ---------------------------- ७८८
परिशिष्ट-४ – ज्ञानावरणादि के बन्धक प्रत्यय-- ८३९
परिशिष्ट-५ – धवलान्तर्गत ऐतिहासिक नाम --- ८४०
परिशिष्ट-६ – भौगोलिक शब्द -- ८४५
परिशिष्ट-७ – षट्खण्डागम सूत्र व धवला टीका के सोलहों भागों की सम्मिलित
पारिभाषिक शब्द सूची -- ८४७
षट्खण्डागम-परिशीलन में प्रयुक्त ग्रन्थों की सूची-- ९०९
शुद्धि-पत्र --- ९१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org